राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस नाम ततुल्य राम नाम वरानने ॥

Regn. No. 1537/2021

प्रभु सेवा परिवार

(इंडिया ट्रस्ट एक्ट, 1882 के तहत निगमित एक धार्मिक ट्रस्ट पंजिकरण संख्या 1537/2021)

+91- 9839639952
+91- 8808836666

प्लॉट नंबर 30 वरूण एन्क्लेव, ग्रेटर नोएडा

prabhusewaparivar@gmail.com

स्मारिका

2022-23

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी

संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ गजाननं भूतागणादि सेवितम्, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

Regn. No. 1537/2021

प्रभु सेवा परिवार का गीत

हमारा प्रभु सेवा परिवार।
प्रभु के भक्तों का परिवार।।

राम कथा भागवत कराता,
सबको तीरथ धाम घुमाता।
कथा सुनें सब तीरथ करके,
हो जावें भवपार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

निर्धन दीन जनों की सेवा,
गो सेवा और प्रभु की सेवा।
सेवा जिसका मूल मंत्र है,
करता पर उपकार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

एक बनें हम, नेक बनें हम,
मानवता के काम करें हम।
यही हमारा सत्प्रयास है,
श्रेष्ठ बने संसार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

Regn. No. 1537/2021

स्मारिका : 2022- 23

संस्थापक:
पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी

अध्यक्ष:
श्री सतीश श्रीवास्तव

सम्पादक:
श्रीमती सोनल खरे

प्रकाशक
प्रभु सेवा परिवार (पंजी.)
प्लाट संख्या-30, वरूण इंक्लेव
ग्रेटर नोयडा-201310
फोन- +91- 9839639952,
+91- 8808836666
ई-मेल: prabhusewaparivar@gmail.com

स्मारिका: 2022–23 में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण, सम्बन्धित लेखकों/सामग्री प्रदाताओं के हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक या मुद्रक का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। यह पत्रिका केवल निजी वितरण के लिए है।

अनुक्रमणिका

1. संपादकीय 2
2. प्रभु सेवा परिवार– एक परिचय 3
3. सेवा एवं कार्य 4
4. संस्थापक का संदेश 5
5. अध्यक्ष का संदेश 6
6. गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें 7–8–9
7. प्रभु सेवा परिवार : एक दृष्टि में 10
8. धर्मराज–सावित्री संवाद 11–12
9. गुरू तत्व 13
10. बन्दउँ गुरू पद कंज 14–15
11. गुरू तत्व, गुरू पद, गुरू व्यक्ति 16
12. विज्ञापन 17
13. गुरू एवं शिष्य 18
14. बारह ज्योतिलिंग का स्मरण 18
15. जगत का सार भजन 18
16. भक्त, भगवान भगवति प्राप्ति 19
17. ईश्वर की कृपा 20
18. प्रभु सेवा परिवार एक विहगंम दृष्टि 21
19. प्रभु स्तुति 21
20. आगामी यात्राऐं 22
21. हमारे सदस्यगण 23–24
22. बैलेंस सीट 25
23. संचालक के नाम 26–27
24. हमारे सहयोगी 28

सम्पादकीय

श्रीमति सोनल खरे
सम्पादक

प्रभु सेवा परिवार की द्वितीय स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्मारिका 2022–2023 प्रकाशित करने जा रहा है। प्रभु सेवा परिवार द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जाना निसन्देह प्रशंसनीय है। प्रभु सेवा परिवार ने विगत दो वर्षो मे बहुत ही सराहनीय कार्य किया है–

1. द्वारिका पुरी में 24 दिसम्बर 2021 से 01 जनवरी 2022 नये साल के शुभ अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन, इस कथा का लाईव प्रसारण ईश्वर चैनल पर किया गया। नागेश्वर नाथ एवं सोमनाथ ज्योर्तिलिंग का दर्शन ।
2. 19 मई 2022 से 30 मई 2022 तक उत्तराखण्ड की चारधाम यात्रा का सफल आयोजन किया गया।
3. 18 जुलाई 2022 से 25 जुलाई 2022 तक कोलकाता में आयोजित शिव महापुराण की कथा का विशेष प्रसारण सुभारती चैनल पर किया गया।
4. 24 दिसम्बर 2022 से 04 जनवरी 2023 तक रामेश्वर धाम में नये साल के शुभ अवसर पर श्री राम कथा का सफल आयोजन एवं जिसका विशेष प्रसारण सुभारती चैनल पर किया गया। दक्षिण भारत की यात्रा मे श्री शैलम मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग तिरूपति बालाजी, महालक्ष्मी जी का स्वर्ण मन्दिर बैल्लूर, काचीपुरम, मदुरई मिनाक्षी मन्दिर, कन्याकुमारी मन्दिर, विवेकानन्द शिला स्मारक और पद्मनाभ स्वामी मन्दिर त्रिवेन्द्रम की दर्शन ।
5. गुरूपूर्णिमा 2023 के शुभ अवसर पर अयोध्या धाम में 02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023 तक श्रीराम कथा का भव्य आयोजन एवं गुरूपूर्णिमा का सफल आयोजन किया गया। अयोध्या धाम में सन्तो की सेवा, गरीबो की सहायता एवं भण्डारा किया गया।
6. पुरूषोत्तम मास में बैकुण्ठ धाम बद्रीनाथ में 09 अगस्त 2023 से 15 अगस्त 2023 श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन और जिसका विशेष प्रसारण श्री दिशा भक्ति चैनल पर किया गया।

आगामी श्रीमद् भागवत कथा जगन्नाथपुरी धाम में 26 दिसम्बर 2023 से 01 जनवरी 2024 तक नये साल के शुभ अवसर पर निश्चित किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रभु सेवा परिवार निरन्तर आगे बढ़ रहा है।

अन्त में प्रभु सेवा परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनायें देती हूँ और संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए परमात्मा से कामना करती हूँ।

प्रभु सेवा परिवार - एक परिचय

प्रभु सेवा परिवार एक धार्मिक और धर्मार्थ ट्रस्ट है जो इंडिया ट्रस्ट एक्ट 1882 के तहत पंजीकृत है और जो 15 सितंबर 2021 को स्थापित किया गया है और जिसका पंजीकरण संख्या 1537/2021 है।

ट्रस्ट आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 12ए और 80जी के तहत भी पंजीकृत है।

ट्रस्ट के मुख्य उद्धेश्य इस प्रकार हैः

• भारत के किसी भी हिस्से में जनता के लाभ के लिए उपरोक्त उद्धेश्य के लिए कथा, भागवत और इस तरह के अन्य कृत्यों के रूप में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

• समान उद्धेश्य वाले किसी अन्य ट्रस्ट या धार्मिक निकाय को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

• गौशाला की स्थापना और रखरखाव या ऐसी गतिविधियों को करने वाले अन्य संस्थानों को धनराशि उपलब्ध कराना।

• अन्य ट्रस्ट या कॉरपोरेट द्वारा संचालित विभिन्न धार्मिक और धर्मार्थ कार्यक्रमों में योगदान प्राप्त करना और देना, जिसका उद्धेश्य ट्रस्ट के समान उद्धेश्य हैं।

• जनता के बीच ट्रस्ट द्वारा आयोजित धर्मार्थ कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।

धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने और गरीबों को सीधे भेजन कराने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कराना और अन्य संस्थानों के माध्यम से या तो भंडारों या अन्य तरीकों से।

• किसी भी मंदिर और अन्य पूजा स्थलों और धार्मिक संस्थानों को दान देना।

• भारत में किसी स्थान पर जनता के लाभ के लिए वृद्धाश्रम, अनाथालय, निःशुल्क औषधालयए गरीब भोजन के लिए केंद्रों का निर्माण एवं संचालन।

• ट्रस्ट लाभ कमाने के इरादे से कोई भी गतिविधि नहीं करेगा और केवल सेवा के उद्धेश्य से प्रर्दशन करेगा।

• उपरोक्त उद्धेश्य के लिए किसी अन्य ट्रस्ट या संस्थानों से योगदान प्राप्त करना।

प्रभु सेवा परिवार यह मानता है कि मानव जीवन का एक अध्यात्मिक उद्धेश्य है– हम सभी में निवास करने वाले ईश्वर की दिव्यता का अनुभव करना। यह इस अनुभव के माध्यम से है कि केवल एक ही ईश्वर है और हम सभी उसके प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। व्यक्ति अपने भीतर ईश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकता है। परिवार, दोस्तों और समाज के प्रति अपने जिम्मेदारियों को निभाते हुए अध्यात्मिक विकास का सर्मथन करने वाले जीवन के तरीके के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें।

Rgtd No.: 1537/2021

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय!!

प्रभु सेवा परिवार

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थपकः प्रभु सेवा परिवार

हमारे प्रकल्प

* तीर्थों में कथाऐं एवं भण्डारा
* गौ सेवा
* संत सेवा
* गरीब विधार्थीयों को सहयोग
* गरीब कन्याओं की शादी में सहयोग

सभी प्रभु भक्तों से अनुरोध है कि इन प्रकल्पों में तन मन धन से सहयोग कर पुन्य के भागी बने

अध्यक्ष
सतीश श्रीवास्तव
मो० 8808836666

PRABHU SEWA PARIVAR
Bank: CANARA BANK
Branch: 3699 - Ranoli, Latifpur, G.B. Nagar (UP)
Account No.: 110014441034
IFSC: CNRB0003699

QR Code
Prabhu Sewa Parivar

जो भी व्यक्ति प्रभु सेवा परिवार में दान देना चाहते हैं तो दान राशि कर मुक्त है (80G की छूट)

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी - सेवा और कार्य

गुरूजी के कार्यों की बात करें तो वह एक अच्छे कथा वाचक हैं और अपनी कथा के माध्यम से लोगों को अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि देश एवं समाज का अच्छा विकास हो, लोगों के सोच में भगवान की भक्ति हो। अपनी कथा में वह हमेशा लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं ताकि उन्हें एक अच्छा जीवन जीने का अवसर मिल सके।

गुरूजी ने लोगों के अन्दर प्रभु की भक्ति का संचार होता रहे। इसी के लिए उन्होंने प्रभु सेवा परिवार ट्रस्ट का गठन 15/09/2021 को किया। गुरूजी प्रभुसेवा परिवार के संस्थापक हैं और इस ट्रस्ट के माध्यम से भारत में या भारत के बाहर पवित्र स्थानों में विभिन्न कथाओं का संचालन करना है। गुरूजी गरीब असहाय एवं जरूरतमंदों का सहारा भी बन रहे हैं और ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने जरूरतमंदों की सहायता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

संस्थापक का संदेश

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक
प्रभु सेवा परिवार

15 सितम्बर 2021 को स्थापित प्रभु सेवा परिवार ने द्वितीय स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के द्वितीय अंक के प्रति अपनी शुभकामनाये देते हुये। परिवार के सभी सदस्य भाई बहनों ने प्रति प्यार भरा आभार व्यक्त करते हुये – सभी को जय सियाराम । प्रभु सेवा परिवार – जैसा कि नाम से ही झलकता है कि ये प्रभु की सेवा करने वालों का परिवार है।

प्रभु का अर्थ है– (सब जग ईश्वर रूप है)
ये संसार ही प्रभु का स्वरूप है। इस संसार और समाज की सेवा ही प्रभु सेवा है। सेवा तीन प्रकार की होती है।।

(1) वित्तजा सेवा – माने धन से सेवा – समाज में कई लोग ऐसे है जिनको हमारे आर्थिक सहयोग की जरूरत है। कई बच्चे है जो आर्थिक तंगी के कारण पढ़ नही पा रहे हैं कई मरीज है– जो धनाभाव मे उपयुक्त इलाज नही करवा पा रहे है कई ऐसी बहने बेटियां है, अर्थाभाव मे उनका विवाह नही हो पा रहा है इनकी सेवा में हमारा कुछ धन लगे – ये वित्तजा सेवा है लक्ष्मी जी के चित्र को देखें – उनके एक हाथ से पैसे बरस रहे है– तो दूसरा हाथ वरद है अर्थात जिसके हाथ से पैसे बरस रहे हो, उसका दूसरा हाथ दीन हीनों की सेवा में उठा रहे।

(2) तनुजा सेवा – कुछ सेवायें होती है, जो शरीर से ही होती है। जैसे– स्वच्छता वृक्षारोपण / गऊ सेवा /कोई प्राकृतिक आपदा भूकंप बाढ आदि में शरीर से सेवा करनी होती है – ये तनुजा सेवा है।

(3) मानसी सेवा – सदविचारों के द्वारा, समाज को सेवा करने की प्रेरणा देना – लोगो को प्रेरित करके सेवा में लगाना – ये मानसी सेवा है। अथवा सबके प्रति सदभाव रखना – ये भी मानसी सेवा में ही आता है।

ये तीनो प्रकार की सेवायें करने वालों का जो परिवार गठित हुआ है वो है– प्रभु सेवा परिवार
इस परिवार के कुशल नेतृत्व में कई–समाज कल्याण और अत्म कलयाण के अनुष्ठान चल रहे है
इस परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सतीश श्रीवास्तव जी का परिवार के प्रति जो सर्मपण है और जिस लगन से आप परिवार के लिये मंगल चिंतन करते है इसके लिये इनको साधुवाद अंत मे देश विदेश मे रह रहे रभी प्रभु प्रेमियों से आग्रह है कि प्रभु सेवा परिवार से आप भी जुड़े तथा अपने हर मित्रों को जोड़े– जिससे हम सब मिलकर और बड़े–2 सेवा कार्यो को मूल रूप दे सके।

हमारा प्रभु सेवा परिवार ।
प्रभु के भक्तो का परिवार ।।

ये जग प्रभु का रूप है प्यारा,
जग सेवा ही मंत्र हमारा ।
दीन जनों की सेवा निसदिन दीन जनो से प्यार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

सेवा सबसे बड़ा धर्म है,
सेवा ही तप है, सुकर्म है।
सेवा सबसे बड़ी है पूजा सृष्टि का आधार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

आओ हम सब हाथ बढायें,
सेवा यज्ञ को सफल बनायें ।
जग सेवा प्रभु सुमिरन करके हो जाये भव पार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

अध्यक्ष का संदेश

Regn. No. 1537/2021

श्री सतीश श्रीवास्तव
अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

सिया बर नयन के सितारे रहे ।
हम उन्ही के रहे, वे हमारे रहे ।।

प्रभु सेवा परिवार के द्वितीय स्थापना दिवस पर मै पूरे परिवार की तरफ से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाये देता हूँ। जैसा आप सबको विदित है कि पिछले वर्ष की भांति पुनः अध्यात्म से आधारित स्मारिका छपवाई जा रही है जिसका श्रेय गुरूजी को जाता है। इस संस्था के संस्थापक गुरू जी के बारे में कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा।

गुरू जी लगन निष्ठा एवं कड़ी मेहनत से भगवान का गुणगान चारो दिशाओ मे फैला रहे है जिससे जन मानस का कल्याण हो रहा है। जिस उद्देश्य के लिए इस संस्था की स्थापना की है उसमे सफलता मिल रही है और आप लोगो के सहयोग से प्रभु सेवा परिवार निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा।

अन्त में मै आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप सभी परिवार का सदस्य बने और अधिक से अधिक लोगो को सदस्य बनाने का प्रयास करें। आपकी औरचारिक सदस्यता और सहयोग प्रभु सेवा परिवार को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभायेगी।

आजीवन सदस्यता प्राप्त करने का विवरण नीचे दिया गया है।

एक बार पुनः गुरू जी के चरणो की वन्दना करते हुये आप सभी भाईयो और बहनो को अभिनन्दन एवं बहुत बहुत शुभकामनाये ।

धन्यवाद

आजीवन सदस्यता प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि मात्र 2100/– रूपए है। आप यह सहयोग राशि नीचे दिए हमारे बैंक एकाउंट में NEFT/UPI/Net Banking आदि के द्वारा जमा कर सकते हैं। एकाउँट का QR Code भी नीचे दिया गया है। सहयोग राशि जमा करने के बाद जमा रशीद, पासपोर्ट साइज फोटो और एक प्रमाणिक पहचान पत्र की कॉपी व्हाट्सएप या ई–मेल के द्वारा हमें भेज दें।

PRABHU SEWA PARIVAR
Bank: CANARA BANK
Branch: 3699 - Ranoli, Latifpur, G.B. Nagar (UP)
Account No.: 110014441034
IFSC: CNRB0003699

WhatsAp No:
8808836666

Email:
prabhusewaparivar@gmail.com

QR Code
Prabhu Sewa Parivar

गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें

1. दक्षिण भारत की यात्रा एवं रामेश्वरम धाम में श्री राम कथा

प्रभु सेवा परिवार ने 24 दिसंम्बर 2022 से 07 जनवरी 2023 तक 15 दिनों की निरन्तर अवधि के लिए दक्षिण भारत की यात्रा और रामेश्वरम धाम में संगीतमय श्रीराम कथा का आयोजन किया। कथा को शुभारती चैनल पर विशेष प्रसारण किया गया था। प्रभु सेवा परिवार ने दक्षिण भारत की यात्रा एवं रामेश्वरम धाम में आयाजित की जा रही श्रीराम कथा के बारे में जनता कों जागरूक करने के लिए सोशल मिडिया के माध्यम से बड़े पैमाने पर पोस्टर एवं बैनर जारी किए। जनता के लिए पोस्टर के नमूने तथा शुभारती चैनल पर मीडिया कवरेज की

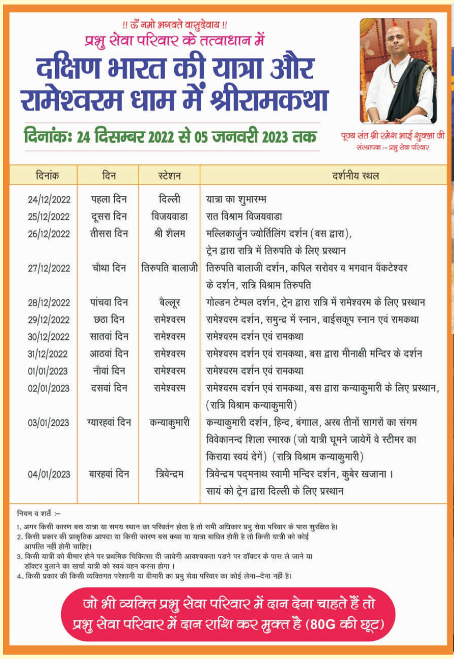
!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय !!

प्रभु सेवा परिवार के तत्वाधान में

दक्षिण भारत की यात्रा और रामेश्वरम धाम में श्रीरामकथा

दिनांकः 24 दिसम्बर 2022 से 05 जनवरी 2023 तक

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ला जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

दिनांक	दिन	स्टेशन	दर्शनीय स्थल
24/12/2022	पहला दिन	दिल्ली	यात्रा का शुभारम्भ
25/12/2022	दूसरा दिन	विजयवाडा	रात विश्राम विजयवाडा
26/12/2022	तीसरा दिन	श्री शैलम	मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग दर्शन (बस द्वारा), ट्रेन द्वारा रात्रि में तिरुपति के लिए प्रस्थान
27/12/2022	चौथा दिन	तिरुपति बालाजी	तिरुपति बालाजी दर्शन, कपिल सरोवर व भगवान वैंकटेश्वर के दर्शन, रात्रि विश्राम तिरुपति
28/12/2022	पांचवा दिन	बैल्लूर	गोल्डन टेम्पल दर्शन, ट्रेन द्वारा रात्रि में रामेश्वरम के लिए प्रस्थान
29/12/2022	छठा दिन	रामेश्वरम	रामेश्वरम दर्शन, समुन्द्र में स्नान, बाईसकूप स्नान एवं रामकथा
30/12/2022	सातवां दिन	रामेश्वरम	रामेश्वरम दर्शन एवं रामकथा
31/12/2022	आठवां दिन	रामेश्वरम	रामेश्वरम दर्शन एवं रामकथा, बस द्वारा मीनाक्षी मन्दिर के दर्शन
01/01/2023	नौवां दिन	रामेश्वरम	रामेश्वरम दर्शन एवं रामकथा
02/01/2023	दसवां दिन	रामेश्वरम	रामेश्वरम दर्शन एवं रामकथा, बस द्वारा कन्याकुमारी के लिए प्रस्थान, (रात्रि विश्राम कन्याकुमारी)
03/01/2023	ग्यारहवां दिन	कन्याकुमारी	कन्याकुमारी दर्शन, हिन्द, बंगाल, अरब तीनों सागरों का संगम विवेकानन्द शिला स्मारक (जो यात्री घूमने जायेगें वे स्टीमर का किराया स्वयं देगें) (रात्रि विश्राम कन्याकुमारी)
04/01/2023	बारहवां दिन	त्रिवेन्द्रम	त्रिवेन्द्रम पद्मनाथ स्वामी मन्दिर दर्शन, कुबेर खजाना। सायं को ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान

नियम व शर्ते :–

1. अगर किसी कारण बस यात्रा या समय स्थान का परिवर्तन होता है तो सभी अधिकार प्रभु सेवा परिवार के पास सुरक्षित है।
2. किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा या किसी कारण बस कथा या यात्रा बाधित होती है तो किसी यात्री को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।
3. किसी यात्री को बीमार होने पर प्रथमिक चिकित्सा दी जायेगी आवश्यकता पडने पर डॉक्टर के पास ले जाने या डॉक्टर बुलाने का खर्चा यात्री को स्वयं वहन करना होगा।
4. किसी प्रकार की किसी व्यक्तिगत परेशानी या बीमारी का प्रभु सेवा परिवार का कोई लेना–देना नहीं है।

जो भी व्यक्ति प्रभु सेवा परिवार में दान देना चाहते हैं तो प्रभु सेवा परिवार में दान राशि कर मुक्त है (80G की छूट)

2. गुरूपूर्णिमा के शुभअवसर पर अयोध्या धाम में श्री राम कथा

प्रभु सेवा परिवार ने 02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023 तक गुरूपूर्णिमा के शुभअवसर पर अयोध्या धाम में संगीतमय श्री राम कथा का विशाल आयोजन एवं 3 जुलाई को गुरूपूर्णिमा भव्य रूप से मनाया गया। अयोध्या धाम में सरयू स्नान, रामलला दर्शन, कनक भवन दर्शन, हनुमान गढी दर्शन एवं अयोध्या के समस्त मन्दिरों का दर्शन संतजनो का दर्शन का पूर्ण लाभ मिला इस आयोजन के माध्यम से भक्तों ने गुरूजी के साथ गुरूपूर्णिमा धूम–धाम से मनाया। भक्तों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था प्रभु सेवा परिवार द्वारा की गई थी। जनता के लिए पोस्टर के नमूने हैं:

3. पुरूषोत्तम मास में बद्रीनाथ धाम में श्रीमद् भागवत कथा

प्रभु सेवा परिवार ने 08 अगस्त 2023 से 17 अगस्त 2023 तक बद्रीनाथ धाम में श्रीमद् भागवत कथा का भव्य आयोजन किया। गुरूजी के साथ बद्रीनाथ भगवान के दर्शन, भारत के प्रथम ग्राम मणिभद्रपुरी (माणा) का भ्रमण, माँ सरस्वती का उदगम एवं स्वर्ग जाने का रास्ता का दर्शन किया। और इसे दिशा भक्ति चैनल पर डिजिटल रूप से प्रसारित किया गया।

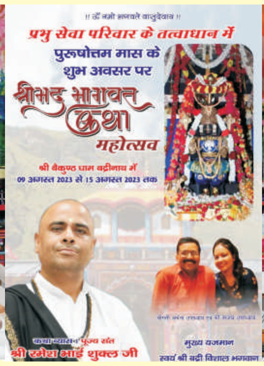

4. गत वर्ष में आयोजित अन्य कथाओं का विवरण

क्र०सं०	दिनांक	स्थान
1	26 सितम्बर 2022 से 04 अक्टूबर 2022	पचौरा ग्वालियर, मध्य प्रदेश
2	05 अक्टूबर 2022 से 13 अक्टूबर 2022	महेवा इटावा, उत्तर प्रदेश
3	14 अक्टूबर 2022 से 22 अक्टूबर 2022	अयोध्या, उत्तर प्रदेश
4	27 अक्टूबर 2022 से 03 नवम्बर 2022	विकास नगर लखनऊ, उत्तर प्रदेश
5	05 नवम्बर 2022 से 13 नवम्बर 2022	खदरा लखनऊ, उत्तर प्रदेश
6	16 नवम्बर 2022 से 24 नवम्बर 2022	प्रयाग, उत्तर प्रदेश
7	26 नवम्बर 2022 से 02 दिसम्बर 2022	सीतापुर, उत्तर प्रदेश
8	03 दिसम्बर 2022 से 11 दिसम्बर 2022	चित्रकूट, मध्य प्रदेश
9	13 दिसम्बर 2022 से 20 दिसम्बर 2022	गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
10	24 दिसम्बर 2022 से 07 जनवरी 2023	दक्षिणी भारत की यात्रा एवं राम कथा
11	08 जनवरी 2023 से 18 जनवरी 2023	करनैल गंज गोंडा, उत्तर प्रदेश
12	24 जनवरी 2023 से 26 जनवरी 2023	लखनऊ, उत्तर प्रदेश
13	29 जनवरी 2023 से 06 फरवरी 2023	प्रयाग, उत्तर प्रदेश
14	10 फरवरी 2023 से 18 फरवरी 2023	भेड़ी कोना छत्तीसगढ़
15	20 फरवरी 2023 से 24 फरवरी 2023	नादौन, हिमाचल प्रदेश
16	26 फरवरी 2023 से 6 मार्च 2023	गोपी गंज, उत्तर प्रदेश
17	10 मार्च 2023 से 18 मार्च 2023	चंदौसी, उत्तर प्रदेश
18	22 मार्च 2023 से 30 मार्च 2023	चंडीगढ़
19	01 अप्रैल 2023 से 09 अप्रैल 2023	बढहल गंज, उत्तर प्रदेश
20	11 अप्रैल 2023 से 18 अप्रैल 2023	पुटकापुरी, छत्तीसगढ़

क्र.सं.	दिनांक	स्थान
21	22 अप्रैल 2023 से 30 अप्रैल 2023	चम्पावत, उत्तराखण्ड
22	04 मई 2023 से 12 मई 2023	रायगढ़, छत्तीसगढ़
23	13 मई 2023 से 21 मई 2023	धुलिया, महाराष्ट्र
24	25 मई 2023 से 02 जून 2023	गोपाल गंज, विहार
25	05 जून 2023 से 13 जून 2023	जानकी पुरम लखनऊ, उत्तर प्रदेश
26	15 जून 2023 से 19 जून 2023	लखीमपुर, उत्तर प्रदेश
27	20 जून 2023 से 30 जून 2023	अलीगंज, लखनऊ
28	02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023	अयोध्या, उत्तर प्रदेश
29	15 जुलाई 2023 से 23 जुलाई 2023	कोलकाता, पश्चिम बंगाल
30	26 जुलाई 2023 से 06 अगस्त 2023	लखीमपुर, उत्तर प्रदेश
31	09 अगस्त 2023 से 23 अगस्त 2023	बद्रीनाथ धाम, उत्तराखण्ड
32	21 अगस्त 2023 से 28 अगस्त 2023	अमृतसर, पंजाब
33	03 सितम्बर 2023 से 10 सितम्बर 2023	चंडीगढ़

प्रभु सेवा परिवार : एक दृष्टि में

सुश्री शिप्रा दीक्षित
लखनऊ

स्थापना : 15 सितम्बर वर्ष 2021
पंजीकरण संख्या : 1537 / 2021
ट्रस्ट पंजीकरण एक्ट : इण्डिया ट्रस्ट एकट 1882 के तहत पंजीकृत
आयकर अधिनियम : आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12 A और 80 G के तहत पंजीकृत

संस्थापक : संत श्री रमेश भाई शुक्ल

अध्यक्ष : श्री सतीश श्रीवास्तव

उद्देश्य :

(1) जनमानस का कल्याण : प्रभु सेवा परिवार का मुख्य उद्देश्य जनमानस का कल्याण करना है और इस उद्देश्य की पूति हेतु तीर्थ यात्राओं, सत्संग धार्मिक कथाओं, भागवत् कथा आदि का आयोजन ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर कराया जाना।

(2) सनातन धर्म व संस्कृति का प्रसार : सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार हेतु धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं धार्मिक संस्थानो को दान देना ।

(3) गौ सेवा करना : गौमाता की सेवा हेतु धनराशि उपलब्ध कराना जिसके द्वारा गौ शालाओं का रख-रखाव भली भांति किया जा सके एवं गौमाता का संरक्षण एवं सेवा हो सके।

(4) निर्धनों का सहयोग : निर्धनों की दैनिक आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र आदि) की पूर्ति हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान करना।

(5) वंचित वर्ग का सहयोग : वंचित वर्ग के सहयोग हेतु वृद्धाश्रम, अनाथाल्य एवं औषधालयों की स्थापना एवं संचालन में सहयोग करना।

(6) अन्य धार्मिक संस्थानों का सहयोग : अन्य धार्मिक संस्थान यदि समाज हित में संलग्न होकर कोई आयोजन करता है तो उस धार्मिक आयोजन से सहभागी बनकर यहयोग प्रदान करना ।

(7) निर्धन विद्यार्थियों के लिए सहयोग : वह कुशल निर्धन विद्यार्थी जो पुस्तक नोट बुक आदि की व्यवस्था करने में अक्षम हैं उनकी शिक्षा की व्यवस्था हेतु सहयोग करना।

(8) शिक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता : अशिक्षित नागरिकों में शिक्षा के महत्व को समझाना एवं स्वच्छता का महत्व बताना साथ ही गन्दगी से होने वाली बीमारियों एवं उससे बचाव पर चर्चा करना ।

प्रभु सेवा परिवार की प्रेरणा का मुख्य स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी का यह विश्व व्यापी विचार है । अज्ञानी लोग जिसे मनुष्य कहते है, मैं उस नारायण का सेवक हूँ। अर्थात्

'नर सेवा - नारायण सेवा'

इस ट्रस्ट का एकमेव उद्देश्य प्रत्येक उस व्यक्ति का हर सम्भव स्तर पर सहयोग करना है जो मानवीय मूल्यों के आधार पर सहयोग आकांक्षी है। प्रभु सेवा परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से कार्य करते हुए निः स्वार्थ भाव से वंचित वर्ग की सेवा हेतु तन मन धन से तत्पर है। इसके साथ-साथ यह प्रभु सेवा परिवार प्रत्येक व्यक्ति में उच्च मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का विकास करते हुए देश हित में सभ्य नागरिको के निर्माण में सहयोग कर रहा है। अर्थात् प्रभु सेवा परिवार जन कल्याण एवं सामाजिक कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित है।

नम्र निवेदन

प्रस्तुत स्मारिका में परम पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ला जी द्वारा स्थापित एवं अध्यक्ष श्री सतीश श्रीवास्तव जी द्वारा कुशलतापूर्वक संचालित प्रभु सेवा परिवार द्वारा लोकहित में किए गए कार्यो का संक्षिप्त विवरण है। इसके साथ-साथ प्रभु सेवा परिवार के अन्य सदस्यों के धर्म एवं संस्कृति से सम्बन्धित एवं गुरू जी को समर्पित रूचिकर लेख हैं। आप सभी कल्याणाकांक्षी भक्तों से निवेदन है कि इस पुस्तिका का अध्ययन करके लाभान्वित हो और प्रभु सेवा परिवार के जन कल्याणकारी कृत्यों में सहभागी बनकर पुण्य अर्जित करें।

धर्मराज-सावित्री संवाद

श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
लखनऊ

सत्यवान सर दर्द के कारण पेड़ से नीचे उतर कर सावित्री के गोद में सर रख कर लेट गए। जब वे नींद में आए तब राजपुत्री ने उस स्थान पर स्वयं धर्मराज को आए देखा, जो नीले कमल के समान श्यामवर्ण से सुशोभित और पीताम्बर धारण किये हुए थे सावित्री ने धर्मराज जी से पूछा–प्रभु क्या सब जीवों के प्राण लेने आप ही जाते है ? यदि नही तो माता–पिता के सेवक मेरे पति के प्राण लेने आप क्यो आए है?

धर्मराज जी ने कहा–पुत्री माता पिता की ही सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानने वाले जीव, जिसकी देख रेख सेवा में धर्मपरायण स्त्री के रूप मे सावित्री लगी हो उसके प्राण लेने में यमराज व उनके दूत सछम/समर्थ नही होते, तब प्रकृति के नियम को चलाए रखने के लिए, महान जीवात्मा को दिव्य लोक ले जाने हेतु मुझे ही आना होता है। धर्मराज जी ने काल पास फेंककर सत्यवान के शरीर से अंगूठे के परिमाण वाले पुरूष को पाश में बाँधकर अपने अधीन किया और शीघ्रतापूर्वक दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया। पति को प्राणरहित देखकर सावित्री जाते हुए धर्मराज के पीछे–पीछे चली और काँपते हुए हृदय से अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली – भगवान

''माता की भक्ति से इस लोक, पिता की भक्ति से मध्यम लोक और गुरू की भक्ति से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। जो इन तीनों का आदर करता है, उसने मानो सभी धर्मों का पालन कर लिया तथा जिसने इन तीनों का आदर नहीं किया उसके किये हुए समस्त पुण्यकार्य निष्फल हो जाते हैं। पुरूष के सारे कर्म माता, पिता और गुरू इन्हीं तीनों में समाप्त हो जाते हैं।''

मेरे पति सत्यवान इन सारे गुणों से परिपूर्ण है, फिर उनके साथ यह व्यवहार क्यो ? यमराज ने कहा–तुम्हारी बाते उत्तम प्रकति की है मै तुम से प्रसन्न हुआ। कोई बरदान माग लो। सावित्री ने ससुर का राज पाठ वापस मांग लिया। धर्मराज के तथास्तु कहने के बाद सावित्री पुनः धर्मराज के पीछे चलने लगी। धर्मराज ने कहा–अहो सावित्री! तुम इस मानव–देह से कहाँ जा रही हो? यदि पतिदेव के साथ जाने की तुम्हारी इच्छा है तो पहले इस शरीर का त्याग कर दो। मर्त्यलोक का प्राणी इस पाञ्चभौतिक शरीर को लेकर मेरे लोक में जाने का अधिकारी नही है। साध्वि! तुम्हारा पति सत्यवान् पृथ्वी पर आया था, उसकी आयु अब पूर्ण हो चुकी, अतएव अपने किये हुए कर्म का फल भोगने के लिये अब वह मेरे लोक को जा रहा है।

प्राणी का कर्म से ही जन्म होता है और कर्म से ही उसकी मृत्यु भी होती है। सुख, दुःख, भय और शोक–ये सब कर्म के अनुसार प्राप्त होते रहते हैं। कर्म के प्रभाव से जीव इन्द्र भी हो सकता है। अपना उत्तम कर्म उसे ब्रह्मपुत्र तक बनाने में समर्थ है। अपने शुभ कर्म की सहायता से प्राणी श्रीहरि का दास बनकर जन्म आदि विकारों से मुक्त हो सकता है। सम्पूर्ण सिद्धि, अमरत्व तथा श्रीहरि के सालोक्यादि चार प्रकार के पद भी अपने शुभ कर्म के प्रभाव से मिल सकते हैं। देवता, मनु, राजेन्द्र, शिव, गणेश मुनीन्द्र, तपस्वी, क्षत्रिय, वैश्य, म्लेच्छ, स्थावर, जंगम, पर्वत, राक्षस, किन्नर, अधिपति, वृक्ष, पशु, किरात, अत्यन्त सूक्ष्म जन्तु कीड़े, दैत्य, दानव तथा असुर–ये सभी योनियाँ प्राणी को अपने कर्म के अनुसार प्राप्त होती हैं। इसमें कुछ भी संशय नहीं है। इस प्रकार सावित्री से कहकर यमराज मौन हो गये। कहते हैं–मुने पतिव्रता सावित्री ने यमराज की बात सुनकर परम भक्ति के साथ उनका स्तवन किया। धर्मराज ने प्रसन्न होकर एक और वर मांगने के लिए कहा, दूसरे वर के रूप में सावित्री ने सास–ससुर की आंख में रोशनी माग ली।

धर्मराज के ततास्तु कहने पर पुनः धर्मराज के पीछे चलने लगी। सावित्री ने पूछा –

भगवन्! कौन कार्य है, किस कर्म के प्रभाव से क्या होता है, कैसे फल में कौन कर्म हेतु है, कौन देह है और कौन देही है अथवा संसार में प्राणी किसकी प्रेरणा से कर्म करता है? ज्ञान, बुद्धि, शरीरधारियों के प्राण, इन्द्रियाँ तथा उनके लक्षण एवं देवता, भोक्ता, भोजयिता, भोज, निष्कृति तथा जीव और परमात्मा– ये सब कौन और क्या हैं? इन सबका परिचय देने की कृपा कीजिये। धर्मराज बोले– साध्वी सावित्री! कर्म दो प्रकार के हैं–

शुभ और अशुभ। वेदोक्त कर्म शुभ हैं। इनके प्रभाव से प्राणी कल्याण के भागी होते हैं। वेद में जिसका स्थान नहीं है, वह अशुभ कर्म नरक प्रद है। भगवान् विष्णु की जो संकल्परहित अहैतु की सेवा की जाती है, उसे 'कर्म–निर्मूलरूपा' कहते हैं। ऐसी ही सेवा 'हरि–भक्ति' प्रदान करती है। कौन कर्म के फल का भोक्ता है और कौन निर्लिप्त–इसका उत्तर यह है। श्रुति का वचन है कि श्रीहरि का जो भक्त है, वह मनुष्य मुक्त हो जाता है। जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, शोक और भय–ये उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते। साध्वि! श्रुति में मुक्ति भी दो प्रकार की बतायी गयी है, जो सर्वसम्मत है। एक को 'निर्वाणप्रदा' कहते हैं और दूसरी को 'हरिभक्तिप्रदा'। मनुष्य इन दोनों के अधिकारी हैं। वैष्णव पुरूष हरिभक्तिस्वरूपा मुक्ति चाहते हैं और अन्य साधु–जन निर्वाणप्रदा मुक्ति की इच्छा करते हैं। कर्म का जो बीजरूप है, वही सदा फल प्रदान करने वाला है। कर्म कोई दूसरी वस्तु नहीं, भगवान्

श्रीकृष्ण का ही रूप है। वे भगवान् प्रकृति से परे हैं। कर्म भी इन्हीं से होता है। क्योंकि वे उसके हेतु रूप हैं। जीव कर्म का फल भोगता है। आत्मा तो सदा निर्लिप्त ही है। देही आत्मा का प्रतिबिम्ब है, वही जीव है। देह तो सदा से नश्वर है। पृथ्वी, तेज, जल वायु और आकाश–ये पाँच भूत उसके उपादान हैं। परमात्मा के सृष्टि–कार्य में ये सूत्ररूप हैं। कर्म करने वाला जीव देही है। वही भोक्ता और अन्तर्यामीरूप से भोजयिता भी है।

सुख एवं दुःख के साक्षात् स्वरूप वैभवका ही दूसरा नाम भोग है। निष्कृति मुक्ति को ही कहते हैं। सदसत्सम्बन्धी विवेक के आदिकारण का नाम ज्ञान है। इस ज्ञान के अनेक भेद हैं। घट–पटादि विषय तथा उनका भेद ज्ञान के भेद में कारण कहा जाता है।

विवेचनमयी शक्तिको 'बुद्धि' कहते हैं।

श्रुति में ज्ञानबीज नाम से इसकी प्रसिद्धि है। वायु के ही विभिन्न रूप प्राण हैं। इन्हीं के प्रभाव से प्राणियों के शरीर में शक्तिका संचार होता है। इन्द्रियों में प्रमुख, परमात्मा का अंश, संशयात्मक, कर्मों का प्रेरक, प्राणियों के लिये दुर्निवार्य, अनिरूप्य, अदृश्य तथा बुद्धिका एक भेद है, उसे 'मन' कहा गया है।

'मन ही' शरीरधारियों का अंग तथा सम्पूर्ण कर्मों का प्रेरक है। यही इन्द्रियों को विषयों में लगाकर दुःखी बनाने के कारण 'शत्रुरूप' हो जाता है और सत्कार्य में लगाकर सुखी बनाने के कारण 'मित्ररूप है।' आँख, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा आदि इन्द्रियाँ हैं। सूर्य, वायु, पृथ्वी और वाणी आदि इन्द्रियों के देवता कहे गये हैं। जो प्राण एवं देहादिकों धारण करता है, उसी की 'जीव' संज्ञा है। प्रकृति से परे जो सर्वव्यापी निर्गुण ब्रह्म हैं, जो सभी जगह सभी के चित्त में व्याप्त है उन्हीं को **'परमात्मा चित्रगुप्त'** कहते हैं। **ये कारणों के भी कारण हैं।** धर्मराज ने सावित्री के ज्ञान पिपासा से खुश होकर (सत्यवान के प्राण के अतिरिक्त) तीसरा वर मांगने के लिए कहा। सावित्री ने पुत्रवती होने का वरदान मांगा। धर्मराज जी ने तथास्तु कह दिया। सावित्री द्वारा... पति के प्राण के लिए कहा तो धर्मराज सोच में पड़ गए, और विधि के नियंता भगवान चित्रगुप्त की आराधना करने लगे, भगवान चित्रगुप्त के आदेश से सत्यवान के प्राण यमराज के पाश से मुक्त होकर सत्यवान के शरीर मे प्रवेश कर गए। सत्यवान के विशेष गुणों तथा सावित्री के सतीत्व के प्रभाव के पुण्य से सत्यवान जीवित होकर अपने राज्य का संचालन करते हुए पत्नी सावित्री के सान्निध्य में माता–पिता व प्रजा की सेवा में रत हो गए।

सती सावित्री व सत्यवान की जय मत्स्य पुराण में सत्यवान सावित्री की कथा का वर्णन है।

गुरू तत्व

संजय कुमार उपाध्याय
गोरखपुर

गुरू बिन भवनिधि तरहिं न कोई। जो बिरंचि शंकर सम होई॥

राम चरित मानस में ही कहा गया है कि गुरू के मार्गदर्शन के बिना इस संसार रूपी भवसागर को पार करना असम्भव ही है, कोई बिरला भगवान शंकर के समान ही हो सकता है जो बिना गुरू के ही इस संसार रूपी भवसागर को पार कर सके।

अब मन में सहस ही यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान समय में जब धर्म का आडम्बर बहुधा येन–केन प्रकारेण धनार्जन करने हेतु अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु हो रहा है ऐसे में वास्तविक गुरू की खोज कैसे की जाए, उन तक कैसे पहुँचा जाए? तभी हरि कृपा से अध्ययन करते समय कबीरदास जी के सूक्ष्मवेद 'कबीर सागर' के अध्याय में पढ़ा,

गुरू के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना ।
दुजे हरि भक्ति मन कर्म बानि, तीजे सम दृष्टि करि जानि।
चौथे वेद विधि सब कर्मा, ये चार गुरू गुण जानो मर्मा ।।

और ईश्वर की कृपा से कुछ ही समयान्तराल में गुरूदेव भगवान का व्याख्यान टेलीविजन मे सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । वह व्याख्यान इतना प्रेरक था कि गुरू जी के व्याख्यान सुनने में एक निरन्तरता आ गयी। कहते भी हैं कि बिनु सत्संग विवेक न होई .... और फिर गुरू जी के सत्संग सजीव रूप से कथा स्थलो में जाकर सजीव रूप से सुने तो यह अनुभव हुआ कि उपर्युक्त समस्त लक्षण अथवा गुण तो उनमें साक्षात् परिलक्षित हो रहे है, शास्त्र सम्मत वाणी एवं वक्तव्य, सदैव कथा में एवं कथा उपरान्त भी हरि चर्चा व हरि भक्ति में लीन रहना, सभी को समान दृष्टि से देखना उनके लिए कोई अमीर नही है, कोई गरीब नहीं है कोई अच्छा भी नहीं कोई बुरा भी नही है। वह बहुधा कहते भी है : सियाराम मय सब सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरजुगपानी ।।

अत्यन्त विशाल व्यक्तित्व, वैज्ञानिक सोच, तार्किक बुद्धि एवं सदैव सत्य की खोज मे संलग्न रहते हुए भी स्वयं को सूक्ष्म प्रदर्शित करना ही उनकी गुरूता को दर्शाता है। जैसा कि मानस गुरू गीता में भी कह गया है कि

अचिन्त्याव यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त जगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ।।

गुरू जी अपनी कथा में, व्याख्यान में गूढ़ से गूढ़ तथ्यों को सरल भाषा में वेसे समझा देते हैं कि हमने वेद–शास्त्रों के कठिन श्लोकों को इतनी आसानी से समझ लिया है, यह हमें ता नही चलता है। कथा, प्रवचन, व्याख्यान सुनते–सुनते ऐसा प्रतीत होता है जैसे मानो साक्षात् परमात्मा के निकट पहुँच कर हम उन्हे देख रहे है, हम उन्हे सुन रहे है, कहने का तात्पर्य है कि परमात्मा की समीपता का अनुभव सहज ही हो जाता है। अब यह भी समझ ओ जाता है कि कबीरदास जी ने किस भाव से लिखा होगा :

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागो पाय,
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय ।

संक्षिप्त सार यह है कि जैसा कि मनोविज्ञान भी कहता है कि हम जो सुनते, देखते, पढ़ते है वह सब हमारे अवचेतन मन में संकलित हो जाता है ठीक इसी प्रकार से गुरूजी की शिक्षाएं हमारे व्यवहार को परिमार्जित एवं परिष्कृत करके हमारा आध्यात्मिक मार्ग स्वतः ही प्रशस्त कर देती है। और तब हमें एक धन्यता का अनुभव होता है कि हरि कृपा से हमारे जीवन में ऐसे सन्त का आगमन हुआ क्योंकि 'बिनु हरि कृपा मिलहि न सन्ता' धन्य हैं हम सब, हमारा प्रभु सेवा परिवार कि हमें गुरूदेव भगवान का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त है। गुरूदेव भगवान के श्री चरणों में निवेदित करना है: ''बन्दऊँ गुरू पद कंज, कुपा सिन्धु नर रूप हरि। महामोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर।। ''गुरूदेव भगवान से प्रार्थना है कि अपना आशीर्वाद व अनुग्रह हम सब पर सदैव बनाए रखे और हमारा आध्यात्मिक मार्ग सदैव प्रशस्त करते रहें।

बन्दउँ गुरू पद कंज

रमेश कुमार दीक्षित
लखनऊ

सदगुरू व्यक्ति नहीं, तत्व होता है। प्रत्येक व्यक्ति की सफलता के पीछे किसी सद्गुरू का ही हाथ होता है। सद्गुरू ईश्वर से भी महान होता है। सद्गुरू के मार्गदर्शन से ही मनुष्य सफलता प्राप्त करता है। जो सद्गुरू के मार्गदर्शन से चलता है, उसे जीवन में कभी ठोकरे नहीं खानी पड़ती हैं। मध्य प्रदेश के पन्ना जनपद में अगत्स्य मुनि का आश्रम है, जिसे सिद्धनाथ आश्रम के नाम से जाना जाता है। एक बार अगत्स्य मुनि आश्रम की देख–रेख का उत्तरदायित्व अपने शिष्य सुतीक्ष्ण जी को सौंप कर कुछ दिनों के लिये तीर्थाटन पर चले गयें।

मुनि अगस्तिकर शिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना।।

सुतीक्ष्ण जी आश्रम की देख–रेख में लग गयें। आश्रम का भ्रमणर करने हेतु सुतीक्ष्ण जी जैसे ही चले, तो सोचने लगे कि साथ में ठाकुर जी (शालिग्राम) को भी ले चलें, घुमा लाऊँगां। आश्रम मे सरोवर के किनारे एक जामुन का पेड़ था। बालक बुद्धि सुतीक्ष्ण की जामुन खाने की इच्छा हुई। जामुन का विशाल वृक्ष था। आव देखा न ताव, ठाकुर जी को लेकर जामुन तोड़ने लगे। जैसे बालक पत्थर मार–मार कर फल तोड़ते है न, वैसे ही सुतीक्ष्ण ने जामुन तोड़ने के लिये ठाकुर जी को ही उछाल दिया। किन्तु जिसको भगवान के चरणों में प्रेम हो गया हो, जिसें भगवान की भक्ति मिल गयी हो उसके मन में छोटी–छोटी कामनायें आ जाये न, तो फिर भक्ति चली जाती है :–

बिनु सन्तोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाही ।।

ठाकुर जी की सेवा मिल गई, सन्तों का सानिध्य मिल गया, सन्त भी अगत्स्य मुनि जैसा, लेकिन जामुन पाने की छोटी सी कामना ।अब जामुन तो दो–चार नीचे आ गई लेकिन ठाकुर जी सरोवर में चले गये। सुतीक्षण जी को अब जामुन अच्छी नही लग रही। सोच रहे है, है परमात्मा अब गुरू जी आयेंगे, तो जवाब क्या दूँगा। सुतीक्ष्ण जी ने सोचा तब तक बचने का कोई उपाय किया जाये। उन्होने एक बड़ी सी जामुन ठाकुर जी के सिहांसन पर रख दी। गुरूजी (अगत्स्य मुनि) आये तो देखा ठाकुर जी तो बहुत चमक रहें हैं। थोड़ा दूर से देखा, आवाज लगाई, सुतीक्ष्ण ने कहा ठाकुर जी की मन से सेवा की है न ? गुरू जी सोच रहे हैं मेरा पूरा जीवन ही निकल गया लेकिन ठाकुर जी में ऐसी चमक कभी नहीं आई। मन नहीं माना और पास से देखने के लिये गयें। जैसे ही ठाकुर जी को उठाया, ठाकुर जी में उगलियाँ घुस गई, क्योंकि तीन दिन में जामुन अन्दर से सड़ गई। गुरू जी को क्रोध आया, बोले मेरे ठाकुर जी कहाँ है? सुतिक्ष्ण जी बोले वह बैठे तो है चमक रहे हैं। गुरू जी ने कहा, मेरे ठाकुरजी गल कैसे गये। सुतीक्ष्ण ने कहा, गर्मी का समय है, आपने कहा था। अच्छी सेवा करना। मैने तो खूब सेवा की।

पुनि–पुनि चन्दन पुनि पुनि पानी। ठाकुर गल गये हम का जानी ।।

गुरू जी (अगत्स्य) ने कहा इसी वक्त मेरे आश्रम से बाहर निकल जाओ। सुतीक्ष्ण जी ने गुरू जी से कोई तर्क–वितर्क नहीं किया, कोई सफाई नहीं दी आँखों में आँसू भर आये। सुतीक्ष्ण जी बोले, गुरू जी, मुझे वापस कब आना है ? गुरू जी ने कहा, जब मेरे ठाकुर जी को साथ लाना, उसी दिन आश्रम में आना, नहीं तो मुँह मत दिखाना। सुतीक्ष्ण ने कहा ठीक है और रोते हुये आश्रम से बाहर चले गये। सन्त और ये जो सद्गुरू होते है न, ये शिष्य की सारी कामनाओं का नाश करते है।। तभी तो कहते हैं कि :–

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः
गुरूर्साक्षात परम् ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः

गुरू के चार मुँह तो हैं नही, फिर ब्रह्मा, कैसे, गुरू के चार भुजाये तो है नही, फिर चतुर्भुज श्री हरि विष्णु कैसे, गुरू के पाँच मुँह तो है नही, फिर शंकर (महादेव) कैसे ? ये जो सदगुरू होते हैं न ये हमारे अन्तःकरण में सद्गुणों की सृष्टि करते हैं, इसलिये ब्रह्मा है, क्योकि ब्रह्मा का काम है सृजन करना। श्री हरि विष्णु का काम है सृष्टि का पालन–पोषण करना। सद्गुरू हमारे अन्तःकरण में सद्गुणों का पोषण करतें हैं इसलिए सद्गुरू श्री हरि विष्णु है। गुरू महेश्वर कैसे है, महेश्वर तो संहार करते है। सद्गुरू भी हमारे अन्तःकरण के दुर्गुणों का नाश करते हैं, संहार करते है, इसलिये सद्गुरू महादेव भी हैं जैसे खेत में किसान फसल की निराई करके खर–पतवार निकाल कर फसल की रक्षा करते हैं, वैसे ही सद्गुरू भी अपने शिष्य के, भक्त के अन्तःकरण के विकारों को, दुर्गुणों को नष्ट करके सद्गुणों का पोषण करते है। अगत्स्य जी ने देखा कि अभी शिष्य (सुतीक्ष्ण) के अन्तःकरण में तुच्छ सी कामना नष्ट नहीं हुई है, जब तक हम अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं करेंगे, तब तक परमात्मा मिलने वाला नहीं है। सद्गुरू भी किसान की तरह अपने शिष्य के अन्तःकरण की निराई करते हैं :–

कृषि निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना। चतुर किसान जैसे अपनी फसल की निराई करते है, विवेकी/बुद्धिमान लोग उसी प्रकार मोह, मद, मान की निराई करके सद्गुणो को पोषण करते है। सद्गुरू अपने शिष्य के अन्तःकरण की निराई करते हैं।

गुरू जी कहते है कि ये काम करना है, ये काम नहीं करना है, कुछ कामों का जबर्दस्ती करवाते हैं, कुछ काम जबरदस्ती छोड़वाते हैं। लेकिन जिन कामों को गुरूजी छोड़वाते हैं, उनके बारे में हमें

भविष्य में पता चलता है कि गुरू जी ने हमसे ये कार्य क्यों छोड़वाये। सद्‌गुरू परमब्रह्म है, क्योकि जब हम बिना सद्‌गुरू के साधना/भक्ति करते हैं, तो उसका दुष्प्रभाव होता है और अच्छा परिणाम तो सद्‌गुरू के मार्गदर्शन से ही सम्भव है। अस बर मै प्रभु कबहुँ न जाँचा, समुझि न परै झूठ का साँचा सद्‌गुरू वैद बचन विश्वास संजम यह न विषय कै आसा। गृहस्थ आश्रम सबसे बड़ा है, लेकिन नियम से नहीं रहे तो फिर गृहस्थ जीवन विनाश का कारण बन जायेगा। इसलिये सद्‌गुरू का मार्गदर्शन अत्यन्त आवश्यक है। सुतीक्ष्ण जी को गुरू जी (अगत्स्य मुनि) ने आश्रम से इसीलिये निकाला कि इतनी अच्छी भक्ति होने के बाद भी, दिन रात सत्संग मिलने के बाद भी, उनकी छोटी सी कामना के कारण ठाकुर जी (शालिग्राम) सरोवर में चले गये। अब सुतीक्ष्ण जी मन, कर्म और वचन से भगवान की भक्ति कर रहे है :-

मन क्रम वचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक ।।

श्री राम जी अत्रि मुनि के आश्रम से पंचवटी की ओर जा रहे थे, श्री राम जी को याद आया कि सुतीक्ष्ण को दर्शन दे दें। सुतीक्ष्ण को सूचना मिली कि भगवान (ठाकुर जी) आ रहे हैं। सुतीक्ष्ण जी व्याकुल हो उठे कि मैनें जप, तप, साधना कुछ नही किया, न ही मेरे जीवन मे ज्ञान, भक्ति, वैराग्य है, पता नही भगवान मुझे दर्शन देंगें या नही। अब विधाता से प्रार्थना कर रहें हैं।

हे विधि दीन बन्धु रघुराया। मो से सठ पर करिहहि दाया ।।
नहिं सत्संग जोग जग जागा। नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ।।
दिसि अरू विदिसि पंथ नहि सूझा। को मैं चलउँ कहाँ नहिं बूझा।।
कबहुॅंक फिरि पाछे पुनि जाई। कबहुॅंक नृत्य करइ गुन गाई।।

सुतीक्ष्ण जी कभी आगे जाते है, कभी पीछे जाते है, कभी नृत्य करते है। भगवान कहते हैं कि मेरे भक्त की बातें करते-करते वाणी रूक जाती है, कभी रोने लगता है, कभी हँसने लगता है, कभी लाज, शर्म छोड़ कर नाचने लग जाता है, ऐसा मेरा भक्त अपनी भक्ति से तीनो लोको को पवित्र कर देता है। मम गुण गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा ।।

यही हालत सुतीक्ष्ण जी की हो गई है। बीच रास्ते में आँखे बन्द करके बैठ गये। भगवान ने आवाज लगाई, लेकिन सुतीक्ष्ण ने आँखे नहीं खोली। ध्यान कर रहे है श्री राजा राम जी की छवि का। भगवान ने अपनी छवि हटा कर सुतीक्ष्ण के हृदय में चतुर्भुज रूप की छवि प्रकट कर दी –

भूप रूप तब राम दुरावा। हृदय चतुर्भुज रूप देखावा ।।
मुनि अकुलाई उठा तब कैसे । बिकल हीन मनि फनिबर जैसे ।।

सुतीक्ष्ण जी ने हड़बड़ा कर आंखे खोल दी, देखा श्री राम, लक्ष्मण, सीता तीनों सामने खड़े हैं। राम जी ने कहा कुछ मांग लो। सुतीक्ष्ण जी ने माँगा –

अस अभिमान जाई मन मोरें। मैं सेवक, रघुपति पति मोरे ।।
अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम। मम हिय गगन इन्दु इव बसहु सदा निहकाम ।।

सुतीक्ष्ण जी ने कहा, भगवन आप यहाँ से कहाँ जायेगे। श्री राम ने कहा, मुझे अगत्स्य मुनि के यहाँ जाना है। सुतीक्ष्ण बोले मैं भी साथ चलूँ। क्योंकि मुझे गुरूजी के दर्शन बहुत दिनों से नही हुये। श्रीराम ने कहाँ ''एवमस्तु''।

एवमस्तु करि रमा निवासा, हरसि चलें कुंभज रिसि पासा ।।
बहुत दिवस गुर दरसन पाएँ। भए मोहि एहि आश्रम आए।।

सुतीक्ष्ण जी दौड़कर गुरू जी के पास गये कहा गुरूदेव, श्रीराम, लक्ष्मण सीता आये है। ''तुरंत सुतीछन गुरू पहिं गयऊ, करि दंडवत कहत अस भयऊ'' नाथ कोसलाधीस कुमारा, आए मिलन जगत आधारा ।।
राम अनुज समेत वैदेही, निसि दिनु देव जपत हहु देही।

सदगुरू भविष्य के ज्ञाता होते है, सदगुरू सबसे कोमल एवं करूणावान होते हैं। सदगुरू करूणा के सागर होते है। सुतीक्ष्ण ने गुरू जी को कहा, आपने कहा था ना कि जिस दिन ठाकुर जी (भगवान) को लेकर आओगे, तभी आश्रम में आना। गुरूजी ने सुतीक्ष्ण को गले से लगा लिया।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि सदगुरू का क्रोध में दिया गया बचन भी शिष्य के प्रति कल्याणकारी, कृपा और करूणा से भरा होता है। इसलिए बिना किसी तर्क-वितर्क के सद्‌गुरू के बचनों को शिरोधार्य करना चाहिये।
परमपूज्य श्री गुरूदेव की कृपा से ही मुझे, चित्रकूट धाम उत्तराखण्ड के चारों धाम, दक्षिण यात्रा में श्री मल्लिकार्जुन, श्री तिरूपति बाला जी, श्री रामेश्वरम् तथा श्री अयोध्या धाम आदि विभिन्न स्थानों का दर्शन लाभ प्राप्त हुआ। और मैं कह सकता हूँ कि :-

एहि सम मोहि अनुभयउ न दुजे। सब पायउे रज पावन पूजे ।।
बदउं गुर पद कंज कृपा सिन्धु नर रूपहरि। महा मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर ।।

(सन्तो के प्रवचनों एवं कथओं से संकलित)

''गुरू तत्व'' ''गुरू पद'' या ''गुरू व्यक्ति''

श्री अरूण कुमार शुक्ला
बाँदा

03 जुलाई 2023 गुरूपूर्णिमा का दिन, भगवान राम की नगरी अधेध्या सरयू का किनारा और गुरूदेव के द्वारा कही जा रही रामकथा जिसके दौरान गुरूदेव ने गुरू के रूप में व्यक्ति पूजा एवं गुरू तत्व की पूजा साधना की बडी ही सुन्दर व्याख्या की थी। उन्होने तो यहां तक कह दिया कि आने वाले समय में मैं स्वयं गुरू के रूप में व्यक्ति पूजा बन्द कर दूँगा। क्योंकि पूजा गुरू तत्व गुरू पद की होनी चाहिये व्यक्ति की नहीं...... यह सुनकर मन कुछ सोचने पर मजबूर हो गया, तो क्या........ जो वृत्तियों अर्थात वासनाओं से मुक्त हैं, वृत्तियों का त्याग कर निवृत्त है। सदगुरू यह एक पद है, व्यक्ति नहीं, सम्पर्क, प्यार, भक्ति, निष्ठा, करूणा, स्वानन्द, आनन्द के भावों में इसकी जानकारी होती है। यह शान्त है पर वर्णनातीत है, ऐसे सदगुरू पद का दर्शन करना हो तो आशक्तियों से निवृत्ति होना आवश्यक है। इस निवृत्त, निर्विकार मन से जब सदगुरू की प्रार्थना उपासना होती है तो उन दर्शनों का आनन्द शब्दातीत होता है। श्रद्धा, निश्चय तथा समर्पण की भावना के बिना शिष्यत्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिष्य के व्यक्तित्व में कोमलता, संवेदनशीलता और पवित्रता का होना सत्‌शिष्य के प्रमुख लक्षण हैं। लेकिन ऐसे व्यक्ति कहाँ मिलेंगें और सदगुरू तक कैसे पहुँचेंगें। चूँकि सदगुरू पद पर आसीन व्यक्ति का मन गुणग्राही, प्रसन्न व प्रभावी होता है। इसलिये सद्‌गुरू उन्हे स्वयं खोज लेते हैं और उन तक पहुँच जाते हैं। उन्हे विकल मन की आर्त पुकार तुरन्त सुनाई देती है। यह शत-प्रतिशत सत्य है, इसलिये वह ऐसे व्यक्ति को पहचान जाते है, और मन के तार जुडते ही अनुग्रह होता है। अनुग्रह रूप में एक अटूट भाव बन्धन होता है। कभी किसी शिष्य के जीवन में इस क्षण का लाभ प्राप्त होने में देर भी हो सकती है, पर यह एक शाश्वत सत्य है, कि अनुग्रह के पश्चात अहंकार, संदेह, अविश्वास जैसे किसी भी कारणवश शिष्य के मन में दूरी निर्माण होने लगे तब भी गुरू उसे नहीं भूलता। उस दूरी को बढनें नहीं देता। एक बार अपनाने पर सदगुरू की ओर से त्याग असंभव है। गुरू तत्व प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में व्याप्त होता है। लैकिक ज्ञान से लेकर ब्रम्ह ज्ञान तक जन्म से लेकर मृत्यु तक गुरू तत्व की उपस्थित बनी रहती है। शिष्य की मनोदशा में बदलाव गुरू अनुग्रह से ही संभव है। स्वयं में जाग्रत गुरू ही शिष्य में जाग्रति ला सकता है, केवल ज्ञानोपदेश न देकर गुरू उनके अन्दर अभिनव प्राण फूंकने का भी कार्य करता है। पौराणिक मान्यता है कि किसी भी राह पर चलने के लिये अगर गुरू का मार्ग दर्शन मिल जाये तो वह रास्ता आसान हो जाता है। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्वयं कहा किं-

बंदऊ गुरू पद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महा मोह तम पुंज जायु वचन रवि कर निकर।।

अर्थात जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि हर हैं जिनके वचन महा मोह रूपी घने अन्धकार का नाश करने के लिये सूर्य किरणों के समूह हैं ऐसे गुरू महाराज के चरण कमल की मैं वन्दना करता हूँ। कुछ इसी प्रकार महाभारत में जब अर्जुन ने शिष्य भाव से अपने प्रश्न किये तब श्री कृष्ण ने गुरू भाव से गीता रूपी अमृत वर्षा की अर्जुन जब गुरू तत्व में स्थिर चित हो गये तो श्री कृष्ण ने उनकी हर पल रक्षा की।

सद्‌गुरू व शिष्य का रिश्ता अति संवेदनशील व शुद्ध समर्पण पर आधारित होता है। गुरू के मुख से निकला हर शब्द शिष्य के हृदय में ही स्थान ग्रहण करता है। इसलिये सद्‌गुरू द्वारा दिये गुरू मंत्र की जप साधना पूरे मनोयोग से करना चाहिये।

। गुरू देव की जय ।

INSURE INSIGHT

HELLO,

At Insure Insight, we are your expert in providing the right insurance solutions for securing your business & personal needs

RANGE OF SERVICES TO CHOOSE

WE OFFER

CORPORATE INSURANCE

Property/Business insurance, Marine insurance (Import, Export & Domestic), Liability insurance, Employee benefit insurance, Engineering insurance (EAR, CAR & WC), Motor insurance (Private & Commercial), Travel etc

SPECIALTY LINE INSURANCE

Trade Credit Insurance for small & big organizations, Cyber Insurance, Crime Insurance etc.

FINANCIAL LINE INSURANCE

Professional Indemnity insurance,Director and Officers Liability insurance and other related services

INDIVIDUAL/RETAIL INSURANCE

Life Insurance (term, Endowment & ULIP) Personal Accident, Health, Motor insurance, Travel insurance, Household insurance & various other insurance products for individuals

CONTACT US NOW

+91-8383862772
+91-9910999227

info@insureinsight.in

Tower C-1004, Noida One, Sec-62, Noida, U.P-201301

www.insureinsight.in

Contact us for a free assistance whether it's a new policy or review of your current policies

GET INSURED, GET SECURED WITH INSURE INSIGHT

गुरू एवं शिष्य

सतीश श्रीवास्तव

!! ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः !!

गुरू से झोली फैलाकर मांगना चाहिए कि तेरा नाम जपने में बरकत हो और भक्ति में रस आए। वास्तविक शिष्यत्व के लिए अर्जुन, विवेकानन्द, शिवाजी, वीर हनुमान स्तर की शिष्य भावना होनी चाहिए। राम के दल में अनेक लोग थे, पर सभी राम की निजता के अनुरागी थे, क्योंकि वे राम को महामानव रूप में देखते हैं, लेकिन हनुमान को राम से अधिक 'राम का काज' प्रिय इसलिए लगा क्योंकि उनमें राम के प्रति गहरी श्रद्धा थी, साथ ही शिष्यत्व था। श्रद्धा के बल पर वे साहसी थे, सद्संकल्प एवं समर्पण के धनी थे, असली शिष्य जिसमें लेश मात्र का कर्तत्व अभिमान नहीं था। प्रभु स्मरण एवं प्रभु समर्पण ही उनके जीवन का सार था। इसी श्रद्धामय समर्पण के बल पर उन्होंने अपनी भावना को राम के प्रति गुरूत्वमय परकाष्ठा पर पहुंचाया।

गुरू के प्रति यह श्रद्धा ही शिष्य को उच्च आध्यात्मिकता तक पहुंचाती है। एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि श्रद्धा को प्रगाढ़ होने में वर्षो लग जरूर जाते हैं, पर गुरू की परीक्षायें तक उसमें बाधा खड़ी नहीं कर सकती हैं। श्रद्धा का कार्य है साधक को बाधाओं के पार ले जाना । यद्यपि कई बार परीक्षा काल में शिष्य गुरू की निकटता छोड़ने का मन बनाता है, पर श्रद्धा उसे ऐसा करने से रोकती है और शिष्य इन्हें भी पार कर जाता है, इस प्रकार वह श्रद्धावान व्यक्ति असली शिष्य बन गुरूकृपा का अधिकारी बनता है। प्रतीक्षा एवं परीक्षाओं के बीच से ही शिष्य का गुरूत्व सफल होता है। इसी स्तर की श्रद्धा से गुरू की कृपा बरसती है और शिष्य के अस्तित्व की सूक्ष्म गहनतम परतें खुलती हैं। परिणामतः गुरू शिष्य एकाकार होता है और गुरू के सम्पूर्ण आयाम उस शिष्य में फलीभूत होते दिखते हैं।

श्रीमति अन्जू श्रीवास्तव
ग्रेटर नोएडा

बारह ज्योतिर्लिंग का स्मरण...

काशी ही मधुवन हो जाए,
विश्वनाथ धड़कन हो जाए!
नयनों में महाकाल बसे तो,
सन्यासी ये मन हो जाए!
सोमनाथ का करें स्मरण,
मल्लिकार्जुन तन हो जाए!
ममलेश्वर का ध्यान करें,
वैद्यनाथ आंगन हो जाए!
भीमाशंकर के दर्शन हों,
नागेश्वर तपवन हो जाए!
त्रयंबकेश्वर हों नयनों में,
घुश्मेश्वर अंजन बन जाए!
रामेश्वर में राम मिलें तो,
रज केदारनाथ बन जाएं....

!! ऊँ नमः शिवाय !!

पं० राम अधार पाण्डेय
प्रयागराज

जगत का सार भजन

जगत का सार' जीवन का आधार भगवान का नाम है।
इन्ही राम नाम से भव से बेड़ा पार है।।
राम भजन बिनु सुनहु खगेसा ।
मिटहि न जीवन केर कलेसा ।।
करते रहोगे भजन धीरे-धीरे ।
वह मिल जायगा वह रतन धीरे-धीरे ।।
अगर प्रभु से मिलने की दिल में तमन्ना।
करो शुद्ध अन्तः करण धीरे-धीरे ।।
कोई काम दुनिया में मुश्किल नहीं है।
करते रहोगे यतन धीरे-धीरे।।
बुराई को अपने मन से निकालो ।
सुधर जायेगा तेरा जीवन धीरे-धीरे।।

।। जय सिया राम, जय हनुमान ।।

भक्त भगवान भगवति प्राप्ति

श्री विष्णु शंकर दूबे
बडोदा

श्री परमात्मने नमः

बार-बार वर मागऊँ, हरषि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अन पायनी, भगति सदा सत्संग ।।

जय श्री राम तव नाम जपामि नमामि हरि प्रभु सेवा परिवार :- जिसका निरन्तर प्रयत्न है, निर्मल विमल विरक्त विशेष विशुद्ध व्यवहार। श्री गुरू जी के चरण कमल को सादर चरण स्पर्श PSP का एक सदस्य बनना हमारे लिए गौरव की बात है। वर्षो से कई सन्तो को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, परन्तु अब राम कृपा से PSP के संस्थापक पूज्य सन्त श्री रमेश भाई शुक्ल जी का सत्संग प्राप्त हुआ है। अब हमारी समस्या यह है कि भक्ति क्या है? भक्ति पहले या भगवान का प्राप्त होना पहले ?

तब संत श्री ने अपने व्याख्यान मे बताया कि : -

- भगवान की प्राप्ति के विना अखण्ड भक्ति हो ही नही सकती है।
- भगवान की प्राप्ति के लिए भगवान का दास/सेवक बनो ।
- तब हम भगवान का परम प्रिय बन पायेंगे ।

तब श्री गुरूजी ने बताया कि परम प्रिय बनने के लिए क्या करना पड़ता है।
(1) परम प्रिय बनने के लिए सतत् परम सत्य परमात्मा की उपासना करो,
(2) अपना मन भगवान के साकार रूप मे एकाग्र करो
(3) श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा करो (4) अपनी इन्द्रियो का बस मे रखो (5) प्राणियों के हित की समता पूर्वक प्रयत्न करो (6) अपने सभी कर्मो को भगवान को समर्पित करो (7) आर्वचलित भाव, चित से भगवान का ध्यान करो (8) मन बुद्धि भगवान मे लगाओ (9) भगवान के सहारे भगवान के लिए निष्काम कर्म करो (10) सभी कर्म फलो के त्याग की भावना रखो (11) कर्मफल के त्याग के बाद निरन्तर शान्ति का अनुभव का आभास करो (12) किसी के प्रति द्वेष मत करो मित्रता करूणा का भाव हो (13) अहंकार त्याग, सुख दुख मे समता और क्षमावान वनो (14) सन्तोषी और दृढ़ निश्चय वाला सतत योगी वनो (15) किसी से विचलित न हो और न किसी को विचलित करो। (16) सुख दुख भय चिन्ता मे समभाव हो (17) बहुत इच्छा रहित हो पवित्र रहो बहुत सारे कर्मो का परत्यागी बनो (18) बहुत हर्षित न हो ओर न ही शोक करो न पछताओ नही शुभ अशुभ फलो का परिग्रही बनो (19) मान अपमान निन्दा स्तुति सर्दी गर्मी के समता का व्यवहार हो

तब श्री गुरू जी के करूणामयी कृपा से भगवान का अनुभव होगा तब श्री भगवान के प्रति भक्ति भावना सुदृढ़ बनेगी और तब आत्म साक्षात्कार करते हुये शुद्ध भक्ति प्राप्ति होगी। ये सब गुरू जी के सान्धिय मे और आसान बन जाता है।

अतः गुरू के मार्ग दर्शन और गुरू कृपा से श्रद्धावान व्यक्ति अपने गंन्तव्य को सहस ही प्राप्ति कर लेता है।

आजीवन सदस्यता प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि मात्र 2100/- रूपए है। आप यह सहयोग राशि नीचे दिए हमारे बैंक एकाउंट में NEFT/UPI/Net Banking आदि के द्वारा जमा कर सकते हैं। एकाउँट का QR Code भी नीचे दिया गया है। सहयोग राशि जमा करने के बाद जमा रशीद, पासपोर्ट साइज फोटो और एक प्रमाणिक पहचान पत्र की कॉपी व्हाट्सएप या ई-मेल के द्वारा हमें भेज दें।

PRABHU SEWA PARIVAR
Bank: CANARA BANK
Branch: 3699 - Ranoli, Latifpur,
G.B. Nagar (UP)
Account No.: 110014441034
IFSC: CNRB0003699

WhatsAp No:
8808836666
Email:
prabhusewaparivar@gmail.com

QR Code
Prabhu Sewa Parivar

'ईश्वर की कृपा'

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
लखनऊ

एक बार नारद जी ने भगवान से प्रश्न किया कि प्रभु आपके भक्त गरीब क्यों होते हैं? भगवान बोले – 'नारद जी! मेरी कृपा को समझना बड़ा कठिन है।'' इतना कहकर भाव स्पष्ट करने हेतु भगवान नारद के साथ साधु भेष में पृथ्वी पर पधारे और एक सेठ जी के घर भिक्षा मांगने के लिए दरवाजा खटखटाने लगे। सेठ जी दरवाजे की तरफ आए और देखा कि दो साधु खड़े है। भगवान बोले– ''भैय्या! थोड़ा सा खाना मिल जाएगा, बड़े जोरों की भूख हम दोनों को लगी है।'' सेठ जी बिगड़कर बोले ''तुम दोनों को शर्म नही आती। तुम्हारे बाप का माल है ? कर्म करके खाने में शर्म आती है? जाओ–जाओ किसी होटल में खाना मांगना ।'' नारद जी बोले– ''देखा प्रभु! यह आपके भक्तों और आपका निरादर करने वाला सुखी प्राणी है। इसको अभी शाप दे दीजिये।'' नारद जी की बात सुनते ही भगवान ने उस सेठ को अधिक धन सम्पत्ति बढ़ाने वाला वरदान दे दिया। इस पर नारद जी अचम्भित हुए किन्तु कुछ बोले नहीं। इसके बाद भगवान नारद जी को लेकर एक बुढ़िया मैय्या के घर में गए। जिसकी एक छोटी सी झोपड़ी थी, जिसमें एक गाय के अलावा और कुछ भी नहीं था। जैसे ही भगवान ने भिक्षा के लिए आवाज लगायी, बुढ़िया मैय्या बड़ी खुशी के साथ बाहर आयी। दो सन्तों को देख कर प्रणाम किया और आसन देकर बिठाया। उनके पीने के लिए दूध लेकर आयीं और.. बोली – ''प्रभु! मेरे पास और कुछ भी नहीं है, आप लोग इसे ही स्वीकार कीजिये। भगवान ने बड़े प्रेम से दूध स्वीकार किया। तब नारद जी ने भगवान से कहा – ''प्रभु ! अपने भक्तों की इस संसार में स्थिति देखिए, कितनी गरीबी है। मुझसे तो यह देखी नही जाती। यह बेचारी बूढ़ी मैय्या आपका भजन करती है और अतिथि सत्कार भी करती है। आप इसको कोई अच्छा सा आशीर्वाद दीजिए।'' भगवान ने थोड़ा सोचकर उसकी गाय को मरने का अभिशाप दे डाला ।'' यह सुनकर नारद चुप नहीं रह सके और नाराज़गी से कहा – ''प्रभु जी ! यह आपने क्या किया ?'' जिसने आपका और आपके भक्तों का तिरस्कार किया उसे और धनवान बना दिया साथ ही भजनानंदी निर्धन बूढ़ी मैय्या, जिसने यथा संभव सत्कार किया उसकी गाय को मरने का अभिशाप दे दिया?

भगवान बोले – ''यह बूढ़ी मैय्या मेरा बहुत भजन करती है। कुछ दिनों में इसकी मृत्यु हो जाएगी और मरते समय इसको गाय की चिन्ता सताएगी कि ... मेरे मरने के बाद मेरी गाय को कोई कसाई न ले जाकर काट दे, मेरे मरने के बाद इसको कौन देखेगा ? तब इस मैया को मरते समय मेरा स्मरण न होकर बस गाय की चिन्ता रहेगी और वह मेरे धाम को न जाकर गाय की योनि में चली जाएगी।''

उधर सेठ को मैंने धन बढ़ाने वाला वरदान इस लिए दिया कि मरते वक्त धन तथा तिजोरी का ध्यान करेगा और वह तिजोरी के नीचे साँप बनेगा। प्रकृति का नियम है जिस चीज मे अति लगाव रहेगा यह जीव मरने के बाद वही जन्म लेता है और बहुत दुख भोगता है...

ठीक इसी प्रकार सच्चिदानन्द प्रभु यदि चाहते तो निमिष मात्र में ही अर्जुन का मोह भंग कर सकते थे परन्तु विशेष रूप से कलियुग में हम सभी के कल्याणार्थ श्रीमदभगवत गीता का उपदेश दिया। उपरोक्त ''कृपा'' भाव को एक श्लोक में स्पष्ट करते हुए कहा है कि........

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः

हे कुन्ती पुत्र अर्जुन! अन्तकाल में जिस–जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ ''यह मनुष्य'' शरीर का त्याग करता है उस –उसको ही प्राप्त होता है क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है।

प्रभु सेवा परिवार एक विहगंम दृष्टि

डा० जी. सिंह
बहराइच

सत्य, सदाचार, विश्वास, सरलता सहिष्णुता, सादगी और सत्कर्म आनन्दमय जीवन के आधार है, प्रभु सेवा परिवार द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों से मानव जीवन को सार्थक बनाने में निरन्तर सहायता प्राप्त होती है। सब कुछ पाने की लालसा में भोगवादी मानव सब कुछ खो देता है। वस्तुतः वैभव और वासना की तृष्णा कभी तृप्त नही होती है।

आकाश को छूने की चाहत में स्वार्थान्ध उपभोक्ता वादी मनुष्य ही आज सर्वाधिक अशान्त, भ्रान्त श्रान्त और क्लान्त है। बाहर की अमीरी से अन्दर की गरीबी बढ़ती है। प्रेम, धैर्य, सन्तोष अखण्ड आत्म भाव असीम विश्वास त्याग और सहनशीलता से जो परमानन्द की प्राप्ति होती है वो किसी अन्य साधन से नहीं हो सकती और ये सामर्थय सतकर्मो से एवं निरन्तर सतसंग से ही सम्भव है। हम सब परम भाग्यशाली हैं कि मेरे गुरूदेव परम आदरणीय प्रातः, स्मरणीय श्री रमेश भाई शुक्ल जी की तपोछाया में प्रभु सेवा परिवार हम सभी जीवों के आत्म उत्थान के लिये सतत प्रयत्नशील है। प्रभु सेवा परिवार द्वारा मानव कल्याण हेतु अनेकानेक आयोजनों की जितनी भी प्रशंसा की जाय वो कम ही है मै अध्यक्ष श्री सतीश श्रीवास्तव जी के कुशल प्रबन्धन एवं सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति हृदय से आभार एवं शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

प्रभु स्तुति

ईश्वर शरन मिश्रा
गोण्डा (उ०प्र०)

(श्री जगन्नाथपुरी यात्रा के उपलक्ष्य में)

हमारा प्रभु सेवा परिवार, आया जगन्नाथ के द्वार ।

ले के श्रद्धा अपार, करने प्रेम से पुकार ।
पूज्य गुरूदेव के साथ, आया पूरा परिवार ।
बहती कथा की अमृत धार जीवन मे आई बहार ।।
हमारा प्रभु सेवा परिवार ....

दर्शन होवे बारम्बार, प्रभु की कृपा बरसे अपार ।
गुरूवर वंदन बारम्बार, अध्यक्ष जी का बहुत ही आभार ।
जो लाये जगन्नाथ के द्वार, जिनकी महिमा अपार ।।
हमारा प्रभु सेवा परिवार ......

कर लो जीवन का उद्धार, होगा सबका बेड़ा पार ।
हमारी प्रेम से पुकार, प्रभु जी कर लो स्वीकार ।
भक्ति दीजै अपार । करिए भवसागर से पार ।।
हमारा प्रभु सेवा परिवार ....

आगामी यात्राऐं

द्वारिका पुरी धाम में श्रीमद् भागवत कथा एवं यात्रा, उत्तराखण्ड की चार धाम की यात्रा, दक्षिण भारत की यात्रा और राम कथा, अयोध्या धाम में गुरूपूर्णिमा महोत्सव एवं राम कथा और बद्रीनाथ धाम में श्रीमद् भागवत कथा के सफल आयोजन के उपरान्त आगामी जगन्नाथपुरी धाम में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन 26 दिसंबर 2023 से शुरू होकर 01 जनवरी 2024 तक चलेगी।

21 जुलाई 2024 गुरू पूर्णिमा के अवसर पर, श्री धाम वृन्दावन में 20 जुलाई 2024 से 30 जुलाई 2024 तक श्रीमद् भागवत कथा एवं ब्रज चौरासी की यात्रा का आयोजन किया जाएगा। 21 जुलाई 2024 को गुरू पूर्णिमा महोत्सव श्री धाम वृन्दावन में ही मनाया जायेगा । गुरूजी निम्नलिखित योजना के अनुसार विभिन्न स्थानों पर अपनी कथा का संचालन करेंगे।

क्र॰सं॰	दिनांक	स्थान
1	17 सितम्बर 2023 से 27 सितम्बर 2023	सुल्तान पुर, उत्तर प्रदेश
2	03 अक्टूबर 2023 से 13 अक्टूबर 2023	कन्नौज, उत्तर प्रदेश
3	15 अक्टूबर 2023 से 23 अक्टूबर 2023	पचौरा ग्वालियर, मध्य प्रदेश
4	15 नवम्बर 2023 से 23 नवम्बर 2023	उदयपुर, राजस्थान
5	25 नवम्बर 2023 से 03 दिसम्बर 2023	खदरा लखनऊ, उत्तर प्रदेश
6	15 दिसम्बर 2023 से 22 दिसम्बर 2023	पतरा, मध्य प्रदेश
7	26 दिसंबर 2023 से 01 जनवरी 2024	जगन्नाथपुरी धाम, उड़ीशा
8	05 जनवरी 2024 से 13 जनवरी 2024	मुम्बई, महाराष्ट्र
9	16 जनवरी 2024 से 26 जनवरी 2024	लखनऊ, उत्तर प्रदेश
10	02 फरवरी 2024 से 08 फरवरी 2024	छत्तीसगढ़
11	10 फरवरी 2024 से 18 फरवरी 2024	रायगढ़, छत्तीसगढ़
12	21 फरवरी 2024 से 28 फरवरी 2024	गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
13	29 फरवरी 2024 से 08 मार्च 2024	गोविन्द साहिब अकबरपुर, उत्तर प्रदेश
14	28 मार्च 2024 से 05 अप्रैल 2024	चौरी, उत्तर प्रदेश
15	09 अप्रैल 2024 से 17 अप्रैल 2024	बड़ोदा, गुजरात

हमारे सदस्यगण

प्रभु सेवा परिवार ने अपने उद्देश्य के प्रचार के लिए कई सदस्य बनाए हैं। स्थापना के पहले वर्ष में ही ट्रस्ट ने 27 सदस्यों को ट्रस्ट के साथ जोड़ने में सक्षम रहा। सदस्यों के विवरण इस प्रकार हैं:–

श्री सतीश श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1009

श्रीमती अंजू श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1010

श्री अभिषेक श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1011

श्री अरूण कुमार शुक्ला
सदस्य आईडीः 1012

श्री भूपेंद्र गुप्ता
सदस्य आईडीः 1013

श्री राकेश अग्रवाल
सदस्य आईडीः 1014

श्री सत्येंद्र कु० श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1015

श्री निरंजन कु० अग्रवाल
सदस्य आईडीः 1016

श्री ललित प्र० जोशी
सदस्य आईडीः 1017

श्री ओम प्रकाश पान्डेय
सदस्य आईडीः 1018

श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1019

श्री शिवपूजन लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1020

श्री विष्णु शंकर दूबे
सदस्य आईडीः 1021

श्री संदीप सिंह
सदस्य आईडीः 1022

श्री संजय कु० उपाध्याय
सदस्य आईडीः 1023

श्री जितेंद्र कु० उपाध्याय
सदस्य आईडीः 1024

श्री अरविंद श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1025

श्री बालमुकुंद पाण्डेय
सदस्य आईडीः 1026

श्री रमेश कुमार दीक्षित
सदस्य आईडीः 1027

श्रीमती इति अग्रवाल
सदस्य आईडीः 1028

श्री जानकी प्रसाद माहेश्वरी
सदस्य आईडीः 1029

श्री बी० बी० लाल
सदस्य आईडीः 1030

श्री आर० पी० पाण्डेय
सदस्य आईडीः 1031

श्री ए० एन० लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1032

श्री ईश्वर शरण मिश्रा
सदस्य आईडीः 1033

श्री विनोद शर्मा
सदस्य आईडीः 1034

श्री आशुतोष श्रीवास्तव
सदस्य आईडीः 1035

हमारे नये सदस्यगण

प्रभु सेवा परिवार ने इस साल 24 नये सदस्य बनाए हैं। सदस्यों के विवरण इस प्रकार हैं:—

श्रीमती शिप्रा दीक्षित
सदस्य आईडी: 1036

श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा
सदस्य आईडी: 1037

श्री सत्य प्रकाश राय
सदस्य आईडी: 1038

श्रीमती सुनीता उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1039

श्रीमती रंजना शुक्ला
सदस्य आईडी: 1040

श्रीमती अर्चना उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1041

श्री इकान्त गुप्ता
सदस्य आईडी: 1042

श्री ओमप्रकाश पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1043

श्री बृज राज पांडे
सदस्य आईडी: 1044

श्री सुशील कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1045

श्री उमेश चन्द्र दीक्षित
सदस्य आईडी: 1046

श्री किशन दास तिवारी
सदस्य आईडी: 1047

श्री सोहन लाल शुक्ला
सदस्य आईडी: 1048

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
सदस्य आईडी: 1049

श्री बलराम सिंह यादव
सदस्य आईडी: 1050

श्री दिनेश कुमार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1051

श्री प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1052

श्री शीला शर्मा
सदस्य आईडी: 1053

श्री राम आधार पांडेय
सदस्य आईडी: 1054

श्री सूबेदार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1055

श्री रघुवंशमणि तिवारी
सदस्य आईडी: 1056

श्रीमती अनुपमा थापर
सदस्य आईडी: 1057

श्री अवनीश कुमार मिश्रा
सदस्य आईडी: 1058

श्री निवास पांडे
सदस्य आईडी: 1059

Balance Sheet, Prabhu Sewa Parivar for the Year Ended 31 Mar 2023

PRABHU SEWA PARIVAR

GREATER NOIDA

Balance Sheet

for the year ended on 31st March 2023

Amount in Rs. *Amount in Rs.*

Liabilities	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022	Assets	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Trust Fund & Corpus	1	299,300	125,100	Current Assets			
				Cash in Hand	3	149,351	14,922
Income & Expenditure Account				Bank A/c	3	197,576	120,788
Excess of Income over Expenditure	6	47,627	10,610				
Total		346,927	135,710	Total		346,927	135,710

KUMAR ABHAY & CO
Proprietor
ABHAY KUMAR
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C

For and On Behalf of
PRABHU SEWA PARIVAR
PRABHU SEWA PARIVAR
SATISH SRIVASTAVA
(President)
President

PRABHU SEWA PARIVAR

GREATER NOIDA

Income & Expenditure Account

for the year ended on 31st March 2023

Amount in Rs. *Amount in Rs.*

Expenditure	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022	Income	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
				Interest received on Fixed Deposits		-	-
Bank Charges		371.00	90.00	Donation received	2	1,463,092.00	695,900.00
Office Expenses		9,051.00	5,500.00	Interest received	4	4,867.00	1,880.00
Printing & Stationery		4,220.00	2,480.00				
Accounting Charges		13,000.00	12,000.00				
Religious trips & Katha Expenses	5	1,230,000.00	450,000.00				
Bhandara Expenses		170,500.00	65,000.00				
Broadcasting Exp.		-	150,000.00				
Telephone Expenses		3,800.00	2,100.00				
Excess of Income Over Expenditure		37,017.00	10,610.00				
Grand Total		1,467,959.00	697,780.00	Grand Total		1,467,959.00	697,780.00

KUMAR ABHAY & CO
ABHAY KUMAR
Proprietor
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C

PRABHU SEWA PARIVAR
For and On Behalf of
PRABHU SEWA PARIVAR
President
SATISH SRIVASTAVA
(President)

PRABHU SEWA PARIVAR

GREATER NOIDA

Statement of Receipts & Payments

for the year ended on 31.03.2023

Amount in Rs. *Amount in Rs.*

Receipts	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022	Payments	Note No	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Opening Balances as on 01.04.22							
Cash in Hand		14,922.00	-	Bank Charges		371.00	90.00
Bank		120,788.00	-	Office Expenses		9,051.00	5,500.00
				Accouting Charges		13,000.00	12,000.00
				Religious trips & Katha Expenses	5	1,230,000.00	450,000.00
				Bhandara Expenses		170,500.00	65,000.00
Corpus Fund	1	174,200.00	125,100.00	Broadcasating Expenses		-	150,000.00
Donation Received	2	1,463,092.00	695,900.00	Telephone Expenses		3,800.00	2,100.00
				Printing & Stattionery		4,220.00	2,480.00
Indirect Income	4	4,867.00	1,880.00				
				Closing Balances as on 31.03.2023			
				Cash in Hand	3	149,351.00	14,922.00
				Bank	3	197,576.28	120,788.00
Grand Total		1,777,869.00	822,880.00	Grand Total		1,777,869.28	822,880.00

KUMAR ABHAY & CO
Proprietor
ABHAY KUMAR
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C

PRABHU SEWA PARIVAR
For and On Behalf of
PRABHU SEWA PARIVAR
President
SATISH SRIVASTAVA
(President)

Note-1

Corpus Fund (net of Reserve & Surplus)	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Abhishek Srivastava	1,100.00	1,100.00
Anju Srivastava	62,000.00	11,000.00
Satish Srivastava	62,000.00	11,000.00
Opening P/L	-	-
Introduced during the year		
Abhishek Srivastava	74,200.00	-
Anju Srivastava	50,000.00	51,000.00
Satish Srivastava	50,000.00	51,000.00
Grand Total	299,300.00	125,100.00

Note-2

Funds Received/Donation	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Donation Recevied	119,988.00	677,300.00
Membership Fees	35,300.00	18,600.00
Dakshin Bharat Yatra	1,124,204.00	-
Char Dham Yatra	179,400.00	-
Ayodhya Katha	4,200.00	-
Grand Total	1,463,092.00	695,900.00

Note-3

Cash & Bank Balances	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Cash in Hand	149,351.00	14,922.00
Canara Bank	197,576.28	120,788.00
Grand Total	346,927.28	135,710.00

Note-4

Indirect Income	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Bank Interest	4,867.00	1,880.00
Grand Total	4,867.00	1,880.00

Note-5

Religious trips & Katha Expenses	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Dwarkapuri - Gujarat	-	450,000.00
Char Dham Yatra	100,000.00	-
Dakshin Bharat Yatra	1,000,000.00	-
Subharti Media Ltd	130,000.00	-
Grand Total	1,230,000.00	450,000.00

Note-6

Excess of Income over Expenditure	As on 31.03.2023	As on 31.03.2022
Opening Balance	10,610.00	-
Current Year	37,017.00	10,610.00
Grand Total	47,627.00	-

KUMAR ABHAY & CO
Proprietor

PRABHU SEWA PARIVAR
President

संचालक के नाम

गुरूजी ने प्रभु सेवा परिवार संस्था को अग्रसर करने के लिए निम्नलिखित संचालक का मनोनीत किये है।

राज्य	जनपद	नाम	मोबाइल नम्बर
उत्तर प्रदेश	लखनऊ	रविन्द्र यादव	9415082109, 9793888808
उत्तर प्रदेश	गौतमबुद्ध नगर	रामजी, द्विवेदी	9968201152
उत्तर प्रदेश	गाजियाबाद	हरिओम तिवारी	9212573774
उत्तर प्रदेश	प्रयाग	सियाराम	9450592324
उत्तर प्रदेश	प्रयाग	राम आधार पाण्डेय	9838588201
उत्तर प्रदेश	झांसी	जगदीश यादव	9473617517
उत्तर प्रदेश	बलरामपुर	प्रदीप अग्रवाल	9415036049
उत्तर प्रदेश	देवरिया	राधेश्याम तिवारी	8924927391, 9140353507
उत्तर प्रदेश	बाँदा	राजकुमार पाण्डेय	9453290666
उत्तर प्रदेश	आगरा	भोले जी	9897543096
उत्तर प्रदेश	आगरा	नागेन्द्र सिंह चौहान	7906150598
उत्तर प्रदेश	आगरा	उमेश	9028220522
उत्तर प्रदेश	बहराइच	डा0 जी. सिंह	9415036721
उत्तर प्रदेश	गोरखपुर	संजय उपाध्याय	9935202085
उत्तर प्रदेश	कन्नौज	विनय	9415471877
उत्तर प्रदेश	मथुरा	बावरा जी	9520939474
मध्य प्रदेश	सतना	द्वारिका सिंह	9329548202
मध्य प्रदेश	कटनी	आर. पी. पाण्डेय	9907351551
मध्य प्रदेश	ग्वालियर	अनिल शर्मा	9826268235
मध्य प्रदेश	ग्वालियर	पहलाद	6261975071
चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	शिव कुमार मौर्या	9417014415
चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	बलवीर गर्ग	9216607990
हरियाणा	फरीदाबाद	राकेश अग्रवाल	9311736763
हरियाणा	भिवानी	ओमवीर सिंह	8168970073
राजस्थान	जयपुर	निरंजन कुमार	7014311260
महाराष्ट्र	मुम्बई	राज पाण्डेय	9833091410
महाराष्ट्र	धुलिया	बालाजी अग्रवाल	9558406656
गुजरात	बड़ोदा	विष्णु शंकर दूबे	9601012218

राज्य	जनपद	नाम	मोबाइल नम्बर
पश्चिम बंगाल	कोलकाता	राजू शुक्ला	9088885500, 9433010691
हिमाचल प्रदेश	शिमला	रमेश शर्मा	9418060538
विहार	मुंगेर	शंकर प्रसाद	9934886900
कर्नाटक	बंगलोर	रामनिवास विश्वकर्मा	9845237127
छत्तीसगढ़	पुटकापुरी	अरूण साहू	9755307391
उत्तराखण्ड	खटीमा	मोती लाल भट्ट	9359448691
उत्तराखण्ड	खटीमा	सतीश भट्ट	9761777000

आप सभी संचालको से उम्मीद है कि आप संस्था के नियमो का पालन करते हुए समाज व संस्था को अपनी मेहनत से और मजबूत करेंगे।

सहयोगीयों के नाम

प्रभु सेवा परिवार

संस्थापक
श्री रमेश भाई शुक्ल
मो० 9839639952

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री सतीश श्रीवास्तव
मो० 8808836666

राष्ट्रीय महासचिव/कोषाध्यक्ष
श्री अभिषेक श्रीवास्तव
मो० 9582435770

प्रभु सेवा परिवार में वित्तीय वर्ष 2022–23 दान दाताओं के नाम

नाम	स्थान	सहयोग राशि
1. श्री उमेश मुरारी लाल चामरिया	मुम्बई	75000/–
2. श्री चन्द्र किरन गुप्ता	दिल्ली	33000/–
3. श्रीमती सरोज महेश्वरी	विहार	10000/–
4. गुप्त दान		

प्रभु सेवा परिवार स्मारिका 2022–23 प्रकाशन में सहयोगियों के नाम

नाम	स्थान	सहयोग राशि
1. श्री विनय कुमार खरे	लखनऊ	1100/–
2. श्री ओमप्रकाश पाण्डेय	लखनऊ	1100/–
3. श्री राजेन्द्र नाथ चौबे	लखनऊ	1100/–
4. डा0 जी0 सिंह	बहराइच	5000/–
5. श्री विष्णु शंकर दूबे V.S. PHARMACEUTICALS	बड़ोदा	1100/–

प्रभु सेवा परिवार स्मारिका 2022–23 विज्ञापन दाताओं के नाम

नाम	स्थान	सहयोग राशि
1. श्री आशुतोष श्रीवास्तव साहस इन्टरनेशनल प्रा. लि.	ग्रेटर नोएडा	11000/–
2. श्री अनुराग शुक्ला इन्स्योर इनसाइट	नोएडा	5100/–

प्रभु सेवा परिवार श्री अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी को उनकी उच्चतम सेवाओं के लिए विशेष आभार प्रकट करता है। अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी हमारे प्रभु सेवा परिवार के लेखा–जोखा का प्रबंधन दक्षतापूर्वक कर रहे है। आशा करते है कि भविष्य में अपनी सेवायें देते रहेंगे।

प्रभु सेवा परिवार अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी की सफलता की कामना करता है।

M/s Abhishek Srivastava & Co.
Chartered Accountants
www.asc-ca.com

ASC Chartered Accountants

विशेष निवेदन

प्रभु सेवा परिवार के इस स्मारिका के प्रकाशन का यह द्वितीय अंक है। यह स्मारिका प्रभु सेवा परिवार के उद्धेश्यों की प्राप्ती में एक अहम् भूमिका निभाएगी। यह हमारे बीच सूचना संचारण, परिवार के विशेष गतिविधियों एवं क्रियाकलापों, उपलब्धियों आदि की जानकारी आप तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य करेगी। इसके प्रकाशन एवं सफलता के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस स्मारिका के अगले अंक के प्रकाशन के लिए सहयोग राशि, अपने व्यवसाय से संबन्धित विज्ञापन, लेख, कविताएं आदि देने के लिए संपर्क करें:–

सतीश श्रीवास्तवः Mob.: 8808836666, Email: prabhusewaparivar@gmail.com

प्रभु सेवा परिवार
PSP
Regn. No. 1537/2021
तात कबहूँ मोहि जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।
मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपधे।।
श्री SAAHAS
Saahas International Pvt. Ltd.